BARGAHE RISALAT MEN SAHABIYAT KE NAZARANE (HINDI)

सहाबियात के आ'ला औसाफ़ सिलसिला नम्बर 3

बारगाहे रिसालत में सहाबियात के नज़राने

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : *शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी* دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या **इस्लामी सबक़** पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई **दुआ** पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे **याद रहेगा**। दुआ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَاالْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तर्जमा : *ऐ* **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ *! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़ज़मत और बुज़ुर्गी वाले !*

(المُسْتَطْرَف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक–एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
बक़ीअ़
व मग़फ़िरत
13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم **:** सब से ज़ियादा **ह़सरत** क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में **इल्म ह़ासिल** करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने **इल्म ह़ासिल किया** और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी उस **इल्म** पर अ़मल न किया)

(تاریخ دمشق لابن عساکر، ج ۵۱ ص ۱۳۸ دار الفکر بیروت)

किताब के ख़रीदार मुतवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिग में आगे पीछे हो गए हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ़ फ़रमाइये।

मजलिसे तराजिम (हिन्दी)

اَلْحَمْدُلِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ **दा'वते इस्लामी** की मजलिस **"अल मदीनतुल इल्मिय्या"** ने येह रिसाला **"बारगाहे रिसालत में सहाबियात के नज़राने"** उर्दू ज़बान में पेश किया है और **मजलिसे तराजिम** ने इस रिसाले का **हिन्दी रस्मुल ख़त्** करने की सआदत हासिल की है [**भाषांतर** (*Translation*) नहीं बल्कि सिर्फ़ **लीपियांतर** (*Transliteration*) या'नी बोली तो **उर्दू** ही है जब कि लीपि **हिन्दी** की गई है] और **मक्तबतुल मदीना** से **शाएअ़** करवाया है। इस रिसाले में अगर किसी जगह **ग़लती** पाएं तो **मजलिसे तराजिम** को (ब ज़रीअ़ए *Sms*, *E-mail* या *Whats App* ब शुमूल सफ़्हा व सत़र नम्बर) **मुत्तलअ़** फ़रमा कर सवाबे आख़िरत कमाइये।

मदनी इल्तिजा : इस्लामी बहनें डायरेक्ट राबित़ा न फ़रमाएं।...

राबित़ा :- मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मदनी मर्कज़, क़ासिम हाला मस्जिद, नागर वाड़ा, बरोडा, गुजरात (अल हिन्द) ☎ 9327776311

E-mail : tarajim.hind@dawateislami.net

उर्दू से हिन्दी रस्मुल ख़त् (लीपियांतर) ख़ाका

थ = تھ	त = ت	फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج	स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ
ज़ = ذ	ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ	ह़ = ح
श = ش	स = س	ज़ = ژ	ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط	ज़ = ض	स = ص
म = م	ल = ل	घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ी = ئ	ॢ = ؤ	आ = آ	य = ی	ह = ه	व = و	न = ن

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ ط

اَمَّا بَعْدُ! فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

बारगाहे रिसालत में सहाबियात के नज़राने

दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ 32 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल रिसाले **ज़िक्र वाली ना'त ख़्वानी** सफ़ह़ा 1 पर शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत नक़्ल फ़रमाते हैं : ह़ज़रते उबय्य बिन का'ब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की : (फ़राइज़ वग़ैरा के इलावा) मैं अपना सारा वक़्त दुरूद ख़्वानी में सर्फ़ करूंगा तो सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : येह तुम्हारी फ़िक्रों को दूर करने के लिये काफ़ी और तुम्हारे गुनाहों के लिये कफ़्फ़ारा हो जाएगा।[1]

तेरी इक इक अदा पे ऐ प्यारे

सौ दुरूदें फ़िदा हज़ार सलाम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

आमदे सरकार पर ख़ुशियों के तराने

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 107 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **आईनए क़ियामत** सफ़ह़ा 27 पर

[1] .....ترمذی، ابواب صفة القیامة والرقائق والورع، ۲۱-باب، ص ۵۸۳، حدیث: ۲۴۵۷

है : हुज़ूर सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने काफ़िरों की ईज़ा देही और तक्लीफ़ रसानी की वज्ह से मक्कए मुअ़ज़्ज़मा से हिजरत फ़रमाई । मदीने वालों ने जब येह ख़बर सुनी, दिलों में मसर्रत आमेज़ उमंगों ने जोश मारा और आंखों में शादिये ईद का नक़्शा खिंच गया, आमद आमद का इन्तिज़ार लोगों को आबादी से निकाल कर पहाड़ों पर ले जाता, मुन्तज़िर आंखें मक्के की राह को जहां तक उन की नज़र पहुंचती, टिकटिकी बांध कर तकतीं और मुश्ताक़े दिल हर आने वाले को दूर से देख कर चौंक पड़ते, जब आफ़्ताब गर्म हो जाता, घरों पर वापस आते । इसी कैफ़िय्यत में कई दिन गुज़र गए, एक दिन और रोज़ की त़रह़ वक़्त बे वक़्त हो गया था और इन्तिज़ार करने वाले ह़सरतों को समझाते, तमन्नाओं को तस्कीन देते पलट चुके थे, कि एक यहूदी ने बुलन्दी से आवाज़ दी : "ऐ राह देखने वालो ! पलटो ! तुम्हारा मक़्सूद बर आया और तुम्हारा मत़लब पूरा हुवा ।" इस सदा के सुनते ही वोह आंखें जिन पर अभी ह़सरत आमेज़ ह़ैरत छा गई थी, अश्के शादी बरसा चलीं, वोह दिल जो मायूसी से मुरझा गए थे, ताज़गी के साथ जोश मारने लगे, बे क़रारा़ना पेश्वाई को बढ़े, परवाना वार क़ुरबान होते आबादी तक लाए, अब क्या था ख़ुशी की घड़ी आई, मुंह मांगी मुराद पाई, घर घर से नग़माते शादी की आवाज़ें बुलन्द हुईं, लड़कियां दफ़ बजाती, ख़ुशी के लहजों में मुबारक बाद के गीत गाती निकल आईं :

طَلَعَ الْبَدْرُ عَلَيْنَا مِنْ ثَنِيَّاتِ الْوَدَاعِ
وَجَبَ الشُّكْرُ عَلَيْنَا مَا دَعَا لِلّٰهِ دَاعِ[1]

या'नी वदाअ़[2] के टीलों से हम पर एक चांद तुलूअ़ हुवा जब तक **अल्लाह** से दुआ़ मांगने वाले दुआ़ मांगते रहेंगे हम पर ख़ुदा का शुक्र वाजिब है।

सीरते मुस्त़फ़ा में इस के इ़लावा येह अश्आ़र भी दर्ज हैं :

اَيُّهَا الْمَبْعُوْثُ فِيْنَا جِئْتَ بِالْاَمْرِ الْمُطَاعِ
اَنْتَ شَرَّفْتَ الْمَدِيْنَةَ مَرْحَبًا يَا خَيْرَ دَاعِ

या'नी ऐ वोह ज़ाते गिरामी जो हमारे अन्दर मबऊ़स किये गए ! आप صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم वोह दीन लाए हैं जो इत़ाअ़त के क़ाबिल है, आप ने मदीने को मुशर्रफ़ फ़रमा दिया, आप के लिये **ख़ुश आमदीद** है ऐ बेहतरीन दा'वत देने वाले !

فَلَبِسْنَا ثَوْبَ يَمَنٍ بَعْدَ تَلْفِيْقِ الرِّقَاعِ
فَعَلَيْكَ اللّٰهُ صَلّٰى مَا سَعٰى لِلّٰهِ سَاعِ

हम लोगों ने यमनी कपड़े पहने ह़ालांकि इस से पहले पैवन्द जोड़ जोड़ कर कपड़े पहना करते थे तो आप पर **अल्लाह** तआ़ला उस

1 .....आईनए क़ियामत, स. 27 ता 28

2 .....ثَنِيَّةُ الْوَدَاع : मदीना शरीफ़ के जुनूब में एक घाटी का नाम है, जहां तक अह्ले मदीना अपने मुअ़ज़्ज़ज़ मेहमानों को रुख़्सत करने जाया करते थे। (معجم البلدان، ص۹۱)

वक़्त तक रहमतें नाज़िल फ़रमाए जब तक अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के लिये कोशिश करने वाले कोशिश करते रहें।[1]

आमदे सरकार पर इज़हारे मसर्रत

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े महशर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद पर अन्सार की बच्चियों ने जिस वालिहाना अन्दाज़ में इज़हारे मसर्रत किया वोह यक़ीनन अपनी मिसाल आप है और इन बच्चियों के वोह पुर मसर्रत अश्आ़र आज भी हमारे लिये तस्कीने जां का बाइस हैं। आमदे सरकार पर ख़ुशियों के सिर्फ़ येही तराने अन्सारी बच्चियों के विर्दे ज़बान नहीं थे बल्कि मदीनए मुनव्वरा زَادَهَا اللهُ شَرَفًا وَّ تَعْظِيْمًا को बुक़्अए नूर बनाने पर मरहबा कहते हुवे बनी नज्जार की लड़कियां गली कूचों में यूं इज़हारे मसर्रत कर रही थीं :

نَحْنُ جَوَارٍ مِّنْ بَنِي النَّجَّارِ

يَا حَبَّذَا مُحَمَّدٌ مِّنْ جَارٍ[2]

या'नी हम क़बीलए बनी नज्जार की बच्चियां हैं हज़रते सय्यिदुना मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कैसे अच्छे पड़ोसी हैं।

शाने नबवी के क्या कहने !

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! इस दुन्याए फ़ानी में मख़्लूक़ को ख़ालिक़ से मिलाने के लिये बहुत से अम्बियाए किराम व रुसुले

[1] .....सीरते मुस्तफ़ा, स. 176

[2] ..... ابن ماجة، كتاب النكاح، باب الغناء والدف، ص ۳۰۴، حديث: ۱۸۹۹

उ़ज़्ज़ाम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तशरीफ़ लाए। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उन में से हर नबी व रसूल को मुख़्तलिफ़ कमालात व मो'जिज़ात से नवाज़ा। मसलन किसी नबी को हुस्नो जमाल में कमाल अ़ता फ़रमाया तो किसी को जाहो जलाल (शानो शौकत) में। किसी को सल्तनत व माल से नवाज़ा तो किसी को रिफ़्अ़त व अ़ज़मत की दौलते ला ज़वाल से, मगर रब्बे लम यज़ल عَزَّوَجَلَّ ने जब अपने महबूबे बे मिसाल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इस ख़ाकदाने आ़लमे ज़वाल (या'नी ख़त्म होने वाली ख़ाकी ज़मीन) में मबऊ़स फ़रमाया तो आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को न सिर्फ़ हुस्नो जमाल से नवाज़ा बल्कि जाहो जलाल (शानो शौकत) और जूदो नवाल (अ़ता व बख़्शिश) की दौलत से भी ख़ूब माला माल फ़रमाया। जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِی ने क्या ख़ूब कहा है :

حُسنِ یُوسُف دَمِ عیسیٰ یَدِ بَیضَا داری
آنچہ خُوباں ہمہ دَارَند تُو تنہا داری[1]

या'नी सरवरे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام का हुस्न, ह़ज़रते सय्यिदुना ईसा عَلَيْهِ السَّلَام की फूंक और रौशन हाथ रखते हैं, (येही नहीं बल्कि) जो कमालात वोह सारे नबी व रसूल रखते हैं आप अकेले रखते हैं।

ख़ुदा ने एक मुह़म्मद में दे दिया सब कुछ
करीम का करम बे ह़िसाब क्या कहना

1.....फ़तावा रज़विय्या, 30 / 185

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! जब ऐसी शानों वाले नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ने अन्सार के हां क़दम रन्जा फ़रमाया तो उन के हां ख़ुशियों का समां क्यूं न होता और उन की बच्चियां शौक़ो वज्द में क्यूं न महब्बत व इश्क़ से भरपूर तराने गातीं ? क्यूंकि वोह नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام तो ऐसे थे जिन के बारे में किसी ने क्या ख़ूब कहा है :

ख़लीलुल्लाह ने जिस के लिये हक़ से दुआएं कीं
ज़बीहुल्लाह ने वक़्ते ज़ब्ह जिस की इल्तिजाएं कीं
जो बन कर रौशनी फिर दीदए या 'क़ूब में आया
जिसे यूसुफ़ ने अपने हुस्न के नैरंग में पाया
वोह जिस के नाम से दावूद ने नग़मा सराई की
वोह जिस की याद में शाह सुलैमान ने गदाई की
दिले यह्या में अरमान रह गए जिस की ज़ियारत के
लबे ईसा पे आए वा 'ज़ जिस की शाने रह़मत के[1]

अश्आ़र का हुक्म

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! देखा आप ने ! सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शान में अह्ले मदीना की बच्चियों ने अपने जज़्बात का इज़्हार अश्आ़र में कैसे किया ? याद रखिये ! दिली जज़्बात की अ़क्कासी करने वाला कलाम दो त़रह़ का होता है । एक को

[1] .....शाहनामए इस्लाम मुकम्मल, स. 88

नस्र कहते हैं जब कि दूसरा अश्आ़र की शक्ल में होता है और उसे **नज़्म** कहते हैं। अश्आ़र अच्छे भी होते हैं और बुरे भी, मगर याद रखिये ! कोई शै बसा औक़ात अपनी ज़ात की वज्ह से अच्छी या बुरी नहीं होती बल्कि सवाब व इताब का हुक्म उस चीज़ पर मौक़ूफ़ होता है जो उस से अदा की जाए। मसलन हुरूफ़े तहज्जी को देख लें कि इन्हें किसी ख़ास मा'ना के लिये वज़्अ़ नहीं किया गया बल्कि येह तो मुख़्तलिफ़ मआ़नी को अदा करने का आला हैं, जैसे मा'ना चाहें इन से अदा कर सकते हैं ख़्वाह अच्छे हों या बुरे यहां तक कि ईमान से कुफ़्र तक का मा'ना भी इन्ही हुरूफ़ से अदा होता है, लिहाज़ा मुत़लक़न हुरूफ़ को ह़सन या क़बीह़ (अच्छे या बुरे) होने के साथ मौसूफ़ नहीं कर सकते बल्कि येह मद्ह़ व ज़म (ता'रीफ़ व मज़म्मत) और सवाब व इ़क़ाब में उस चीज़ के ताबेअ़ होते हैं जो इन से अदा की जाए, जैसे तल्वार बहुत अच्छी है अगर इस से ह़िमायते इस्लाम की जाए और सख़्त बुरी है अगर ख़ूने ना ह़क़ में बरती जाए। जैसा कि ह़दीसे पाक में है : بِمَنْزِلَةِ الْكَلَامِ، حَسَنُهُ كَحَسَنِ الْكَلَامِ وَقَبِيحُهُ كَقَبِيحِ الْكَلَامِ۔[1] या'नी शे'र ब मन्ज़िलए कलाम के है तो इस का अच्छा मिस्ल अच्छे कलाम के और इस का बुरा मिस्ल बुरे कलाम के। लिहाज़ा अश्आ़र पर फ़ी नफ़्सिहा अच्छे या बुरे होने का कोई हुक्म नहीं हो सकता बल्कि येह अदा किये गए मफ़्हूम के ताबेअ़ होंगे। क्यूंकि बा'ज़ शे'र ह़िक्मत भरे भी होते हैं जैसा कि ह़दीसे सह़ीह़ में

[1] ..... ادب المفرد، باب الشعر حسن كحسن الكلام ومنه قبيح، ص٢٥٦، حديث: ٨٦٥

इरशाद होता है : اِنَّ مِنَ الشِّعْرِ حِكْمَةً[1] बा'ज़ अश्आ़र हिक्मत वाले होते हैं, और दूसरी त़रफ़ अगर बेहूदा बातों और लग़वियात पर मुश्तमिल शाइ़री की जाए तो وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الْغَاوٗنَ (پ ۱۹، الشعرآء:۲۲۴)[2] फ़रमाया गया। वहां [اِنَّ اللّٰهَ يُؤَيِّدُ حَسَّانَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ][3] (या'नी अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ह़ज़रते सय्यिदुना जिब्रील के ज़रीए ह़ज़रते सय्यिदुना ह़स्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की ताईद करता है।) की बशारते जांफ़िज़ा है और दूसरी त़रफ़ [اِمْرَؤُ الْقَيْسِ صَاحِبُ لِوَاءِ الشُّعَرَآءِ اِلَى النَّارِ][4] (या'नी इम्र उल क़ैस शाइ़रों का अ़लमबरदार आतिशे दोज़ख़ में है) की वईदे जांगुज़ा (जान को तक्लीफ़ देने वाली धमकी)।[5]

कैसे अश्आ़र दुरुस्त हैं ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा अगर अश्आ़र में अल्लाह व रसूल (عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم) की ता'रीफ़ हो या उन में हिक्मत की बातें हों या अच्छे अख़्लाक़ की ता'लीम हो तो अच्छे हैं और अगर लग़्व व बात़िल पर मुश्तमिल हों तो बुरे हैं। अक्सर शुअ़रा

[1] .....بخاری، کتاب الادب، باب مایجوز من الشعر...الخ، ص۱۵۲۵، حدیث: ۶۱۴۵

[2].....**तर्जमए कन्ज़ुल ईमान :** और शाइ़रों की पैरवी गुमराह करते हैं।

[3] .....مستدرك، کتاب معرفة الصحابة، ذکر مناقب حسان، ۶۱۶/۴، حدیث: ۶۱۱۲

[4] .....کنز العمال، کتاب الفضائل، الباب السادس، امرؤ القیس، المجلد السادس، ۷۰/۱۲، حدیث: ۳۴۴۴۰

[5].....फ़तावा रज़विय्या, 23 / 458-459 मुलख़्ख़सन

चूंकि ऐसे ही बे तुकी हांकते हैं इस वज्ह से उन की मज़म्मत की जाती है।[1] जो अश्आ़र मुबाह़ हों उन के पढ़ने में ह़रज नहीं। अश्आ़र के पढ़ने से अगर येह मक़्सूद हो कि इन के ज़रीए़ से तफ़्सीर व ह़दीस में मदद मिले या'नी अ़रब के मुह़ावरात और उस्लूबे कलाम से आगाह हो, जैसा कि शुअ़राए जाहिलिय्यत के कलाम से इस्तिद्लाल किया जाता है, इस में भी कोई ह़रज नहीं।[2]

अल ग़रज़ अश्आ़र पर मुश्तमिल कलाम तीन त़रह़ का होता है :

मुस्तह़ब कलाम : इस से मुराद वोह कलाम है जो दुन्या से बचाए और आख़िरत की रग़बत दिलाए या अच्छे अख़्लाक़ पर उभारे, वोह मुस्तह़ब होता है।

मुबाह़ कलाम : इस से मुराद वोह कलाम है जिस में फ़ोह़्श और झूट न हो।

ममनूअ़ कलाम : इस की दो अक़्साम हैं : झूट और फ़ोह़्श और इन दोनों के कहने वालों को ऐ़ब लगाया जाएगा और अगर कोई ह़ालते इज़्त़िरार में पढ़ रहा हो तो मा'यूब (ऐ़बदार) नहीं लेकिन इख़्तियार से पढ़ने वाला मा'यूब (बुरा, बाइ़से नदामत) है।

अलबत्ता ! जो कलाम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इत़ाअ़त, सुन्नत की पैरवी, बिदअ़त से इजतिनाब और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की नाफ़रमानी से

[1].....बहारे शरीअ़त, 3 / 514

[2] ..... فتاوی ھندیہ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع عشر فی الغناء، ۵/ ۴۳۱

बचने पर उभारे, वोह इबादत है और इसी तरह जो कलाम सरकार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ पर मुश्तमिल हो वोह भी इबादत है।[1]

ता'रीफ़े ख़ुदा व रसूल पर मुश्तमिल अश्आर को क्या कहते हैं ?

कलाम (नस्र या नज़्म) का वोह हिस्सा या जुज़ या जिस में ख़ुदा की ता'रीफ़ व सिपास (शुक्र गुज़ारी) हो, जिस कलाम में ख़ुदावन्दे तआ़ला की बड़ाई और कुदरत और ख़ुदाई और उस के कमाल व जलाल का बयान हो इस को हम्द-सना कहते हैं।[2] जब कि वोह मौज़ूं कलाम जिस में सरवरे दो जहां صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की मद्ह व ता'रीफ़ की गई हो या आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के औसाफ़ व शमाइल का बयान हो, नीज़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ात या आप से मन्सूब किसी चीज़ से महब्बत व अ़क़ीदत का इज़हार हो तो उसे ना'त कहते हैं।[3]

मुफ़स्सिरे शहीर, हकीमुल उम्मत मुफ़्ती अहमद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **अल्लाह** तआ़ला की ता'रीफ़ को हम्द कहते हैं, हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ता'रीफ़ को ना'त कहते हैं, बुज़ुर्गाने दीन की ता'रीफ़ को मन्क़बत कहा जाता है ख़्वाह नस्र में हो या नज़्म में।[4]

---

1 ..... الزواجر، الكبيرة الستون والحادية والستون بعد الاربعمائة، ۲/۴۰۳

2 .....उर्दू लुग़त, 8 / 272

3 .....उर्दू लुग़त, 20 / 153

4 .....मिरआतुल मनाजीह, अज़वाजे पाक के फ़ज़ाइल, पहली फ़स्ल, 8 / 494

सरकार की शान ब ज़बाने कुरआन

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कुरआने करीम में जा बजा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अज़मतो शान की मिसालें मज़कूर हैं।

जैसा कि आ'ला हज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت फ़रमाते हैं :

ऐ रज़ा ख़ुद साहिबे कुरआं है मदाहे हुज़ूर
तुझ से कब मुमकिन है फिर मिदहत रसूलुल्लाह की (1)

यहां जैल में चन्द आयाते मुबारका पेशे ख़िदमत हैं

पहली आयते मुबारका

दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बहरो बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की आमद से क़ब्ल ही **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने तमाम नबियों और रसूलों से येह अहदो पैमान ले लिया कि तुम सब दुन्या में मेरे महबूब की तशरीफ़ आवरी का चर्चा करते रहना, इन की नुस्रत व रफ़ाक़त के लिये हर दम कमरबस्ता रहना और इन पर ईमान ला कर अपने सीनों में इन की महब्बत को आबाद रखना। जैसा कि फ़रमाने बारी तआला है :

وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِیْثَاقَ النَّبِیّٖنَ لَمَاۤ اٰتَیْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّ حِكْمَةٍ ثُمَّ

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और याद करो जब* **अल्लाह** *ने पैग़म्बरों से इन का अहद लिया जो मैं तुम को*

1 .....हदाइक़े बख़्शिश, स. 153

جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ؕ

(پ۳، آل عمران: ۸۱)

किताब और हिक्मत दूं फिर तशरीफ़ लाए तुम्हारे पास वोह रसूल कि तुम्हारी किताबों की तस्दीक़ फ़रमाए तो तुम ज़रूर ज़रूर उस पर ईमान लाना और ज़रूर ज़रूर उस की मदद करना।

आ'ला हज़रत इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحمَۃُ الرَّحْمٰن क्या ख़ूब इरशाद फ़रमाते हैं :

सब से औला व आ'ला हमारा नबी — सब से बाला व वाला हमारा नबी

ख़ल्क़ से औलिया, औलिया से रुसुल — और रसूलों से आ'ला हमारा नबी

मुल्के कौनैन में अम्बिया ताजदार — ताजदारों का आक़ा हमारा नबी(1)

दूसरी आयते मुबारका

मैदाने महशर में शाने मुस्तफ़ाई के डंके का ए'लान करते हुवे अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इरशाद फ़रमाया :

عَسٰۤى اَنْ یَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝۷۹ (پ۱۵، بنی اسرآئیل: ۷۹)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : क़रीब है कि तुम्हें तुम्हारा रब ऐसी जगह खड़ा करे जहां सब तुम्हारी हम्द करें।

[1].....हदाइक़े बख़्शिश, स. 138-139

फ़क़त इतना सबब है इनइक़ादे बज़्मे महशर का
कि उन की शाने महबूबी दिखाई जाने वाली है (1)

ब ख़ुदा ख़ुदा का यही है दर, नहीं और कोई मफ़र मक़र
जो वहां से हो यहीं आ के हो, जो यहां नहीं तो वहां नहीं (2)

तीसरी आयते मुबारका

सारे जहान के लिये आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का बाइसे रहमत होना इस फ़रमान से ब ख़ूबी वाज़ेह है :

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿۱۰۷﴾ (پ۱۷، الانبیآء:۱۰۷)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : और हम ने तुम्हें न भेजा मगर रहमत सारे जहान के लिये।

रहमत रसूले पाक की हर शै पे आम है
हर गुल में हर शजर में मुहम्मद का नाम है

चौथी आयते मुबारका

सय्यिदुल महबूबीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र नूरे ईमान व सुरूरे जान है और आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्र बिऐनिही ज़िक्रे रहमान है। अल्लाह عَزَّوَجَلَّ फ़रमाता है :

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ﴿۴﴾
(پ۳۰، الم نشرح:۴)

तर्जमए कन्ज़ुल ईमान : *और हम ने तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द कर दिया।*

1 .....मिरआतुल मनाजीह, हुज़ूर के नाम और हुल्या शरीफ़, 8 / 42
2 .....हदाइक़े बख़्शिश, स. 107

अल्लाह अल्लाह आप का रुत्बा وَسَلَّم عَلَيْهِ اللهُ صَلَّى

पढ़ती है दुन्या रुत्बे का ख़ुत्बा وَسَلَّم عَلَيْهِ اللهُ صَلَّى

हदीस शरीफ़ में है कि इस आयते करीमा के नुज़ूल के बा'द सय्यिदुना जिब्राईले अमीन عَلَيْهِ السَّلَام हाज़िरे बारगाह हुवे और अ़र्ज़ की : आप का रब फ़रमाता है : क्या तुम जानते हो कि मैं ने कैसे बुलन्द किया तुम्हारे लिये तुम्हारा ज़िक्र ? नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने जवाब दिया : اَللهُ اَعْلَم !!! इरशाद हुवा : **''ऐ महबूब मैं ने तुम्हें अपनी यादों में से एक याद किया कि जिस ने तुम्हारा ज़िक्र किया बेशक उस ने मेरा ज़िक्र किया ।''**(1)

सुल्ताने जहां, महबूबे ख़ुदा तेरी शानो शौकत क्या कहना

हर शै पे लिखा है नाम तेरा, तेरे ज़िक्र की रिफ़अ़त क्या कहना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

अ़ज़मते सरकार का इज़हार ब ज़बाने सहाबियात

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हुज़ूरे अक़्दस صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने जिस त़रह़ कमाले सीरत में तमाम अव्वलीनो आख़िरीन से मुमताज़ और अफ़्ज़लो आ'ला बनाया इसी त़रह़ आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को जमाले सूरत में भी बे मिस्ल व बे मिसाल पैदा फ़रमाया । हम और आप हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की शाने बे

1.....माख़ूज़ मिन फ़तावा रज़विय्या, 23 / 752 बह़वाला

کتاب الشفاء، القسم الاول، الباب الاول، الفصل الاول فیما جاء من ذالك... الخ، ص ۲۱ ملخصًا

मिसाल को भला क्या समझ सकते हैं ? हज़राते सहाबए किराम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُم जो दिन रात सफ़र व हज़र में जमाले नुबुव्वत की तजल्लियां देखते रहे उन्हों ने महबूबे खुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के जमाले बे मिसाल के फ़ज़्लो कमाल को जिस तरह बयान किया है वोह भी अपनी मिसाल आप है। जैसा कि हज़रते सय्यिदुना हस्सान बिन साबित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने अपने क़सीदे में जमाले नुबुव्वत की शाने बे मिसाल को यूं बयान फ़रमाया है :

وَاَحْسَنُ مِنْكَ لَمْ تَرَ قَطُّ عَيْنِيْ!
وَاَجْمَلُ مِنْكَ لَمْ تَلِدِ النِّسَآءُ

या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप से ज़ियादा हुस्नो जमाल वाला मेरी आंख ने कभी देखा है न आप से ज़ियादा कमाल वाला किसी औरत ने जना है।

خُلِقْتَ مُبَرَّأً مِّنْ كُلِّ عَيْبٍ!
كَاَنَّكَ قَدْ خُلِقْتَ كَمَا تَشَآءُ

या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप हर ऐब व नक़्स से पाक पैदा किये गए हैं गोया आप ऐसे ही पैदा किये गए जैसे हसीनो जमील पैदा होना चाहते थे।[1]

[1] ..... دیوان حسان بن ثابت الانصاری، قافیۃ الالف خلقت کما تشاء، ص۲۱
सीरते मुस्तफ़ा स. 559

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे मदीना صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते आ़लीशान में सिर्फ़ सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने ही अश्आ़र की शक्ल में नज़रानए अ़क़ीदत पेश नहीं किया बल्कि सह़ाबियाते त़य्यिबात رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُنَّ भी इस सफ़ में किसी से पीछे नहीं। चुनान्चे, ज़ैल में चन्द मिसालें पेशे ख़िदमत हैं :

सरकार की वालिदए माजिदा जनाबे सय्यिदतुना आमिना के अश्आ़र

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़तावा रज़विय्या शरीफ़ में फ़रमाते हैं : इमाम अबू नुऐ़म दलाइलुन्नुबुव्वत में ब त़रीक़े मुह़म्मद बिन शिहाब ज़ोहरी, उम्मे समाआ़ अस्मा बिन्ते अबी रुह्म, वोह अपनी वालिदा से रावी हैं : (कि मैं) ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا के इन्तिक़ाल के वक़्त (उन के पास) ह़ाज़िर थी, मुह़म्मद صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم कमसिन बच्चे कोई पांच बरस की उ़म्र शरीफ़ इन के सिरहाने तशरीफ़ फ़रमा थे। ह़ज़रते ख़ातून ने अपने इब्ने करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ नज़र की, फिर कहा :

بَارَكَ فِيْكَ اللهُ مِنْ غُلَامٍ — يَاابْنَ الَّذِیْ مِنْ حَوْمَةِ الْحِمَامِ
نَجَا بِعَوْنِ الْمَلِكِ الْمُنْعَامِ — فُوْدِیَ غَدَاةَ الضَّرْبِ بِالسِّهَامِ
بِمِائَةٍ مِّنْ اِبِلٍ سَوَامٍ — اِنْ صَحَّ مَا اَبْصَرْتُ فِی الْمَنَامِ
فَاَنْتَ مَبْعُوْثٌ اِلَى الْاَنَامِ — مِنْ عِنْدِ ذِی الْجَلَالِ وَالْاِكْرَامِ

تُبْعَثُ فِي الْحِلِّ وَفِي الْحَرَامِ تُبْعَثُ فِي التَّحْقِيْقِ وَالْاِسْلَامِ
دِيْنُ اَبِيْكَ الْبَرِّ اِبْرَاهَامِ فَاللّٰهُ اَنْهَاكَ عَنِ الْاَصْنَامِ
اَنْ لَّا تُوَالِيَهَا مَعَ الْاَقْوَامِ[1]

ऐ सुथरे लड़के ! अल्लाह तुझ में बरकत रखे। ऐ उन के बेटे ! जिन्हों ने मर्ग (मौत) के घेरे से नजात पाई बड़े इन्आ़म वाले बादशाह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मदद से, जिस सुब्ह़ को कुरआ़ डाला गया 100 बुलन्द ऊंट उन के फ़िदये में कुरबान किये गए, अगर वोह ठीक उतरा जो मैं ने ख़्वाब देखा है तो तू सारे जहान की त़रफ़ पैग़म्बर बनाया जाएगा जो तेरे नेकूकार बाप इब्राहीम का दीन है, मैं अल्लाह की क़सम दे कर तुझे बुतों से मन्अ़ करती हूं कि क़ौमों के साथ उन की दोस्ती न करना।[2]

सरकार की रिज़ाई बहन जनाबे सय्यिदतुना शैमा का कलाम

मक्की मदनी सरकार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रिज़ाई बहन ह़ज़रते सय्यिदतुना शैमा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا सरवरे काइनात صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से अपनी महब्बत का इज़हार यूं फ़रमाती हैं

مُحَمَّدٌ خَيْرُ الْبَشَرْ مِمَّنْ مَّضٰى وَمَنْ غَبَرْ
مَنْ حَجَّ مِنْهُمْ اَوِ اعْتَمَرْ اَحْسَنُ مِنْ وَّجْهِ الْقَمَرْ

[1] ..... المواهب اللدنية، المقصد الاول، ذكر رضاعه صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم، ۱/۸۸

[2] .....फ़तावा रज़विय्या, 30 / 301

مِنْ كُلِّ اُنْثٰى وَذَكَرْ   مِنْ كُلِّ مَشْبُوْبٍ اَغَرْ
جَنِّبْنِيْ اللّٰهُ الْغِيَرْ   فِيْهِ وَاَوْضِحْ لِيْ الْاَثَرْ[1]

या'नी जो इन्सान गुज़र चुके और जो आएंगे उन सब से बेहतर हज़रते मुहम्मद صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हैं। मेरे आक़ा हज व उमरह की सआदत पाने वालों में भी सब से आ'ला बल्कि हुस्नो जमाल में चांद से भी बढ़ कर हैं। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो हर ख़ूब सूरत और बहादुर मर्द व औ़रत से बढ़ कर गै़रत वाले हैं। ऐ मेरे रब! मुझे ह़वादिसे ज़माना से बचा कर मेरे लिये मेरे आक़ा की राह को वाज़ेह़ फ़रमा दे।

सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा के अश्आ़र

एक रिवायत में उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِيَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا से ना'तिया कलाम पर मुश्तमिल येह अश्आ़र मरवी हैं:

فَلَوْ سَمِعُوْا فِيْ مِصْرَ اَوْصَافَ خَدِّهٖ   لَمَا بَذَلُوْا فِيْ سَوْمِ يُوْسُفَ مِنْ نَّقْدٍ
لَوَّامِيْ زُلَيْخَا لَوْ رَاَيْنَ جَبِيْنَهٗ   لَاٰثَرْنَ بِالْقَطْعِ الْقُلُوْبِ عَلَى الْيَدِ

या'नी अगर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के रुख़्सार मुबारक के औसाफ़ अहले मिस्र सुन लेते तो सय्यिदुना यूसुफ़ عَلَيْهِ السَّلَام की क़ीमत लगाने में सीमो ज़र न बहाते और अगर ज़ुलैख़ा को मलामत करने वाली

[1] سبل الهدی والرشاد، جماع ابواب رضاعه... الخ، الباب الثانی فی اخوته من الرضاعة، ۱/۳۶۴

औरतें आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की जबीने अन्वर देख लेतीं तो हाथों के बजाए अपने दिल काटने को तरजीह देतीं।[1]

वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द सहाबियात का कलाम

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले बा कमाल पर सहाबियाते तय्यिबात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ ने जिन अल्फ़ाज़ में आप عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के औसाफ़े हमीदा ज़िक्र किये इन से ज़ाहिर होता है कि उन्हें अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे हबीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से कितना गहरा क़ल्बी लगाव और महब्बत थी। जैल में सहाबियाते तय्यिबात के चन्द कलाम पेशे ख़िदमत हैं :

सरकार की फूफी जनाबे सय्यिदतुना अरवा के अश्आर

सरवरे काइनात, फ़ख़्रे मौजूदात صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फूफी हज़रते सय्यिदतुना अरवा बिन्ते अब्दुल मुत्तलिब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا का शुमार उन साहिबे फ़ज़्ल ख़वातीन में होता है जिन्हें इस्लाम से क़ब्ल ज़मानए जाहिलिय्यत में भी क़द्र की निगाह से देखा जाता था, आप साइबुर्राए थीं और अमीरुल मोमिनीन हज़रते सय्यिदुना उमर फ़ारूक़ رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ज़माने तक हयात रहीं। आप से बहुत ही उम्दा अश्आर मरवी हैं।[2] चुनान्चे, आप رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के महबूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की याद में कई कलाम कहे, इन में से एक कलाम के चन्द अश्आर पेशे ख़िदमत हैं :

[1] ..... شرح العلامة الزرقانی، الفصل الثالث فی ذکر ازواجه الطاهرات، عائشة ام المومنین، ۴/۳۹۰

[2] ..... الاعلام للزرکلی، ۱/۲۹۰

اَلَا یَا رَسُوْلَ اللّٰہِ کُنْتَ رَجَاءَنَا وَکُنْتَ بِنَا بَرًّا وَّلَمْ تَکُ جَافِیَا
وَکُنْتَ بِنَا رَءُوفًا رَّحِیمًا نَبِیَّنَا لِیَبْکِ عَلَیْکَ الْیَوْمَ مَنْ کَانَ بَاکِیَا
لَعَمْرُکَ مَا اَبْکِی النَّبِیَّ لِمَوْتِہٖ وَلٰکِنْ لِھَرْجٍ کَانَ بَعْدَکَ آتِیَا
کَاَنَّ عَلٰی قَلْبِیْ لِذِکْرِ مُحَمَّدٍ وَّمَا خِفْتُ مِنْ بَعْدِ النَّبِیِّ الْمَکَاوِیَا
فِدًا لِرَسُوْلِ اللّٰہِ اُمِّیْ وَخَالَتِیْ وَعَمِّیْ وَنَفْسِیْ قُصْرَۃً ثُمَّ خَالِیَا
صَبَرْتَ وَبَلَّغْتَ الرِّسَالَۃَ صَادِقًا وَّقُمْتَ صَلِیْبَ الدِّیْنِ اَبْلَجَ صَافِیَا
فَلَوْ اَنَّ رَبَّ النَّاسِ اَبْقَاکَ بَیْنَنَا سَعِدْنَا وَلٰکِنْ اَمْرُنَا کَانَ مَاضِیَا
عَلَیْکَ مِنَ اللّٰہِ السَّلَامُ تَحِیَّۃً وَّاُدْخِلْتَ جَنَّاتٍ مِّنَ الْعَدْنِ رَاضِیَا [1]

या'नी या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم आप हमारी उम्मीद और हमारे साथ अच्छा सुलूक करने वाले थे और बिल्कुल सख़्त मिज़ाज न थे। आप हमारे नबी عَلَیْہِ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام हैं और आप हम पर कमाल मेहरबानी व रह़्म फ़रमाने वाले थे, आज (हम आप के दीदार से मह़रूम हो गए हैं, लिहाज़ा) अब हर रोने वाले को चाहिये कि आप की याद में अश्क बहाए। आप की उ़म्र की क़सम ! मैं अपने आक़ा के जहाने फ़ानी से कूच कर जाने के बाइ़स नहीं रोती बल्कि मुझे तो उन मसाइब व आफ़ात पर रोना आता है जो आप के बा'द हम पर नाज़िल होंगी। गोया मेरा दिल आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की याद में तड़पने और

[1] .... الطبقات الکبریٰ لابن سعد، ذکر من رثی النبی صلی اللہ علیہ وسلم، قالت اروی... الخ، ۲/۲۴۸

इन के बा'द दरपेश मसाइबो आफ़ात का ख़ौफ़ लाहिक़ होने की वज्ह से दाग़दार होता जा रहा है। मेरी मां, मेरी ख़ाला, मेरे चचा, मेरे आबाओ अजदाद बल्कि मेरी जान और माल सब कुछ मेरे आक़ा पर कुरबान, आप ने सब्रो इस्तिक़ामत का दामन हमेशा थामे रखा और आख़िरे कार **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के पैग़ाम को रास्ती के साथ हर एक तक पहुंचा कर दीन को उस्तुवार फ़रमाया और उसे ख़ूब वाज़ेह कर दिया। अगर तमाम लोगों का पालनहार हमारे नबी عَلَيْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام को हमारे पास मज़ीद रहने देता तो येह हमारी ख़ुश क़िस्मती होती मगर उस का हमारे मुतअ़ल्लिक़ किया गया फ़ैसला पूरा हो कर ही रहना था। आप पर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की त़रफ़ से सलामे तहिय्यत हो और आप को जन्नते अ़दन में दाख़िल किया जाए इस ह़ाल में कि आप राज़ी हों।[1]

ह़ज़रते हिन्द बिन्ते ह़ारिस बिन अ़ब्दुल मुत्त़लिब का कलाम

ह़ज़रते सय्यिदतुना हिन्द बिन्ते ह़ारिस رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चचाज़ाद बहन थीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बारगाहे नुबुव्वत में अपनी मह़ब्बत का इज़हार कुछ यूं फ़रमाती हैं :

يَا عَيْنِ جُودِي بِدَمْعٍ مِنْكِ وَابْتَدِرِي ۔۔۔ كَمَا تَنَزَّلَ مَاءُ الْغَيْثِ فَانْثَعَبَا

اَوْ فَيْضُ غَرْبٍ عَلٰى عَادِيَّةٍ طُوِيَتْ ۔۔۔ فِي جَدْوَلٍ خَرِقٍ بِالْمَاءِ قَدْ سَرِبَا

1 .....**अत्तबक़ातुल कुब्रा, सुबुलुल हुदा** और **अल इसाबा** में इन अश्आ़र को सय्यिदतुना अरवा की त़रफ़ जब कि **मो'जमे कबीर, अल मुवाहिबुल्लदुन्या** और **अल इस्तीआ़ब** में सय्यिदतुना सफ़िय्या बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की त़रफ़ मन्सूब किया गया है। (इल्मिय्या)

لَقَدْ اَتَتْنِي مِنَ الْاَنْبَاءِ مُعْضِلَةٌ ۔ اَنَّ ابْنَ آمِنَةَ الْمَامُونَ قَدْ ذَهَبَا

اَنَّ الْمُبَارَكَ وَالْمَيْمُونَ فِي جَدَثٍ ۔ قَدْ اَلْحَفُوهُ تُرَابَ الْاَرْضِ وَالْحَدَبَا

اَلَيْسَ اَوْسَطَكُمْ بَيْتًا وَّ اَكْرَمَكُمْ ۔ خَالًا وَّ عَمًّا كَرِيمًا لَيْسَ مُؤْتَشَبَا[1]

या'नी ऐ मेरी आंख ! ऐसी फ़य्याज़ी से आंसू बहा जैसे अब्रे बारां बरसता है तो हर त़रफ़ पानी बहने लगता है। या फिर उस पुराने कुंवें की त़रह़ हो जा जिस का मुंह तो ऊपर से बन्द हो गया हो मगर अन्दरूनी नालियों में उस का पानी बहता हो। मुझे येह मुसीबत भरी ख़बर मिली है कि ह़ज़रते आमिना رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के बरकत वाले फ़रज़न्द इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गए हैं। वोह साह़िबे युम्नो बरकत अब एक क़ब्र में हैं, जिन पर लोगों ने ख़ाक का लिह़ाफ़ ओढ़ा दिया है। क्या तुम सब में वोह शरीफ़ घराने के न थे ? क्या ननहियाल व ददहियाल में वोह ऐसी शराफ़त के मालिक न थे कि जिस में किसी क़िस्म की कोई परागन्दगी न थी।

ह़ज़रते उम्मे ऐमन के फ़िराक़े मह़बूबे ख़ुदा पर कहे गए अश्आ़र

सय्यिदतुना उम्मे ऐमन رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا उम्मुल मोमिनीन ह़ज़रते सय्यिदतुना ख़दीजा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बांदी थीं जिन्हें इन्हों ने सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को हिबा कर दिया तो सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने उन्हें अपनी रिज़ाई वालिदा होने की वज्ह से आज़ाद फ़रमा दिया, आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब भी उन की त़रफ़ देखते तो फ़रमाते कि बस येही

[1] امتاع الاسماع، فصل فی ذکر نبذۃ مما رثی بہ رسول اللہ، قالت ھند بنت اثاثہ، ۱۴/۲۰۱

मेरे अह्ले ख़ाना में से बाक़ी बची हैं (या'नी बाक़ी सब जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा चुके हैं) । नीज़ येह ह़ज़रते सय्यिदुना उसामा बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ की वालिदए माजिदा भी हैं ।[1] चुनान्चे, बारगाहे नुबुव्वत में अपनी मह़ब्बत का इज़्हार कुछ यूं फ़रमाती हैं :

عَيْنِ جُوْدِی فَاِنَّ بِذٰلِكَ لِلدَّمْـ ـعِ شِفَاءٌ، فَاَكْثِرِی مِنَ الْبُكَاءِ
حِينَ قَالُوا الرَّسُولُ اَمْسٰى فَقِيدًا مَيِّتًا كَانَ ذَاكَ كُلَّ الْبَلَاءِ
وَابْكِيَا خَيْرَ مَنْ رُزِئْنَاهُ فِی الدُّنْـ ـيَا وَمَنْ خَصَّهُ بِوَحْیِ السَّمَاءِ
بِدُمُوعٍ غَزِيرَةٍ مِّنْكِ حَتّٰى يَقْضِی اللّٰهُ فِيكِ خَيْرَ الْقَضَاءِ
فَلَقَدْ كَانَ مَا عَلِمْتُ وَصُولًا وَّلَقَدْ جَاءَ رَحْمَةً بِالضِّيَاءِ
وَلَقَدْ كَانَ بَعْدَ ذَلِكَ نُورًا وَّسِرَاجًا يُّضِیءُ فِی الظَّلْمَاءِ
طَيِّبَ الْعُودِ وَالضَّرِيبَةِ وَالْمَعْـ ـدِنِ وَالْخِيمِ خَاتَمَ الْاَنْبِيَاءِ[2]

या'नी ऐ आंख ! अच्छी त़रह़ रो कि रोना ही शिफ़ा है, लिहाज़ा रोने में ज़ियादती कर। जब लोगों ने कहा कि रसूले ख़ुदा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم चले गए तो ऐसे लगा गोया हर क़िस्म की मुसीबत टूट पड़ी हो। ऐ दोनों आंखो ! उस हस्ती पर अश्क बहाओ जो हर उस शख़्स से बेहतर थी जिस की मुसीबत दुन्या में हम पर नाज़िल हुई, बल्कि वोह हस्ती तो हर उस नबी से भी बेहतर थी जिसे आस्मानी वह्य से ख़ास किया गया था। इस क़दर अश्क बहाओ कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तुम्हारे ह़क़ में भी बेहतर फ़ैसला फ़रमा दे, मैं जानती हूं कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रह़मत बन

[1] ..... الاصابة، فيمن عرف بالكنية من النساء، حرف الالف، ۱۱۹۰۲-ام ايمن، ۸/۳۹۹ ملتقطًا
[2] ..... الطبقات الكبرى لابن سعد، ذكر من رثى النبی، قالت ام ايمن، ۲/۲۵۳

कर और रौशनी ले के तशरीफ़ लाए थे। इस क़दर ही नहीं बल्कि आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तो तारीकी में चमकने वाले सिराज व नूर थे। आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم पाक ख़स्लत, पाक मनिश (मिज़ाज), पाक ख़ानदान, पाक आदत और नबिय्ये आख़िरुज़्ज़मान थे।

हज़रते आ़तिका बिन्ते ज़ैद का कलाम

हज़रते सय्यिदतुना आ़तिका बिन्ते ज़ैद बिन अ़म्र बिन नुफ़ैल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا हज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की चचाज़ाद बहन और हज़रते अ़ब्दुल्लाह बिन अबू बक्र सिद्दीक़ (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) की ज़ौजए मोहतरमा थीं, बारगाहे नुबुव्वत में अपनी महब्बत का इज़्हार कुछ यूं फ़रमाती हैं :

أَمْسَتْ مَرَاكِبُهُ أَوْحَشَتْ — وَ قَدْ كَانَ يَرْكَبُهَا زَيْنُهَا
وَ أَمْسَتْ تُبَكِّي عَلَى سَيِّدٍ — تُرَدِّدُ عَبْرَتَهَا عَيْنُهَا
وَ أَمْسَتْ نِسَاؤُكَ مَا تَسْتَفِيقُ — مِنَ الْحُزْنِ يَعْتَادُهَا دَيْنُهَا
وَأَمْسَتْ شَوَاحِبَ مِثْلَ النِّصَا — لِ قَدْ عُطِّلَتْ وَكَبَا لَوْنُهَا
يُعَالِجْنَ حُزْنًا بَعِيدَ الذَّهَابِ — وَفِي الصَّدْرِ مُكْتَنِعٌ حَيْنُهَا
يَضْرِبْنَ بِالْكَفِّ حُرَّ الْوُجُوهِ — عَلَى مِثْلِهِ جَادَهَا شُوْنُهَا
هُوَ الْفَاضِلُ السَّيِّدُ الْمُصْطَفٰى — عَلَى الْحَقِّ مُجْتَمِعٌ دِيْنُهَا
فَكَيْفَ حَيَاتِي بَعْدَ الرَّسُولِ — وَقَدْ حَانَ مِنْ مَّيْتَةٍ حِيْنُهَا [1]

[1] امتاع الاسماع، فصل فی ذکر نبذۃ مما رثی بہ رسول اللّٰہ، ۱۴/۲۰۲

या'नी सुवारियां मुतवह्हिश (वह्शत अंगेज़) हुई जा रही हैं कि जिन पर हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم सुवार होते तो इन की शान बढ़ जाती। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के विसाले बा कमाल पर आंखें हैं कि रोती ही जा रही हैं और आंसू लगातार जारी हैं। ऐ रसूले ख़ुदा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! आप की अज़वाजे मुत़ह्हरात की ह़ालत येह हो गई है कि उन्हें फ़र्ते रंजो ग़म से इफ़ाक़ा होता ही नहीं, बल्कि रंज है कि बढ़ता ही जाता है। वोह फ़र्ते ग़म से इस त़रह़ दुब्ली पतली हो गई हैं जैसे कोई बेकार और बे रंग धागा हो। ब ज़ाहिर वोह अपने दुख पर क़ाबू पाने की कोशिश कर रही हैं मगर उन का येह हुज़्नो मलाल (ग़म) जल्दी जाने वाला नहीं बल्कि वोह तो उन के सीने में क़ैद है। वोह अपनी हथेलियों में चेहरे छुपाए हुवे हैं, ऐसी ह़ालत में ऐसा ही होता है। हुज़ूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم साह़िबे फ़ज़्लो सरदार और बरगुज़ीदा थे, उन का दीन ह़क़ पर मुज्तमेअ़ था। अब मैं आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के बा'द ज़िन्दा कैसे रहूंगी ! आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم तो इस जहाने फ़ानी से कूच फ़रमा गए हैं।

इस्लामी बहनों का ना'त पढ़ना कैसा ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ना'त ख़्वानी आ'ला दरजे की चीज़ है। अच्छी अच्छी निय्यतें कर के ना'त शरीफ़ पढ़ना और सुनना बाइ़से सवाबे आख़िरत और मूजिबे ख़ैरो बरकत है। اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते

इस्लामी के महके महके मदनी माहोल की बरकत से इस्लामी बहनों के दिलों में इश्के़ मुस्त़फ़ा की जो शम्अ़ रौशन हुई है उस की रौशनी घर घर तक पहुंच चुकी है । इस मदनी माहोल में एक से एक खुश आवाज़ ना'त ख़्वान इस्लामी बहनें كَثَّرَهُنَّ اللهُ تعالٰی सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को चाहने वालियों के क़ुलूब को गर्माती और उन्हें इश्के़ मुस्त़फ़ा में तड़पाती हैं । मगर ऐसी तमाम इस्लामी बहनों को शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की येह बातें हमेशा याद रखनी चाहियें जो आप ने दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 400 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **पर्दे के बारे में सुवाल जवाब** सफ़ह़ा 254 ता 256 पर सुवालन जवाबन यूं तह़रीर की हैं :

सुवाल : इस्लामी बहनें इस्लामी बहनों में ना'तें पढ़ सकती हैं या नहीं ?

जवाब : इस्लामी बहनें, इस्लामी बहनों में बिग़ैर माईक के इस त़रह़ ना'त शरीफ़ पढ़ें कि उन की आवाज़ किसी ग़ैर मर्द तक न पहुंचे । माईक का इस लिये मन्अ़ किया कि इस पर पढ़ने या बयान करने से ग़ैर मर्दों से आवाज़ को बचाना क़रीब क़रीब ना मुमकिन है । कोई लाख दिल को मना ले कि आवाज़ शामियाने या मकान से बाहर नहीं जाती मगर तजरिबा येही है कि लाऊड स्पीकर के ज़रीए औ़रत की आवाज़ उ़मूमन ग़ैर मर्दों तक पहुंच जाती है बल्कि बड़ी महाफ़िल में माईक का निज़ाम भी तो अक्सर मर्द ही चलाते हैं ! सगे मदीना عُفِیَ عَنْهُ को एक बार किसी ने बताया कि फ़ुलां जगह महफ़िल में एक साहिबा

माईक पर बयान फ़रमा रही थीं, बा'ज़ मर्दों के कानों में जब उस निस्वानी आवाज़ ने रस घोला तो उन में से एक बे हया बोला : आहा ! कितनी प्यारी आवाज़ है !! जब आवाज़ इतनी पुर कशिश है तो ख़ुद कैसी होगी !!! [1] وَلَاحَوْلَ وَلَاقُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰه

इस्लामी बहनें माईक इस्ति'माल न करें

याद रहे ! दा'वते इस्लामी की त़रफ़ से होने वाले सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त और इजतिमाए़ ज़िक्रो ना'त में इस्लामी बहनों के लिये लाऊड स्पीकर के इस्ति'माल पर पाबन्दी है। लिहाज़ा इस्लामी बहनें ज़ेह्न बना लें कि कुछ भी हो जाए न लाऊड स्पीकर में बयान करना है और न ही इस में ना'त शरीफ़ पढ़नी है। याद रखिये ! ग़ैर मर्दों तक आवाज़ पहुंचती हो इस के बा वुजूद बे बाकी के साथ **बयान** फ़रमाने और **ना'तें** सुनाने वाली गुनहगार और सवाब के बजाए अ़ज़ाबे नार की ह़क़दार है। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه की ख़िदमत में अ़र्ज़ की गई : चन्द औ़रतें एक साथ मिल कर घर में मीलाद शरीफ़ पढ़ती हैं और आवाज़ बाहर तक सुनाई देती है, यूंही मुह़र्रम के महीने में किताबे शहादत वग़ैरा भी एक साथ आवाज़ मिला कर (या'नी कोरस में) पढ़ती हैं, येह जाइज़ है या नहीं ? मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : नाजाइज़ है कि औ़रत की आवाज़ भी औ़रत

[1].....पर्दे के बारे में सुवाल जवाब, स. 254

(या'नी छुपाने की चीज़) है और औ़रत की ख़ुश इल्हानी कि अजनबी सुने महल्ले फ़ितना है।[1]

औ़रत के राग की आवाज़

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه मज़ीद तह़रीर फ़रमाते हैं : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه एक और सुवाल के जवाब में इरशाद फ़रमाते हैं : औ़रत का (ना'तें वग़ैरा) ख़ुश इल्हानी से ब आवाज़ ऐसा पढ़ना कि ना मह़रमों को उस के नग़मे (या'नी राग व तरन्नुम) की आवाज़ जाए ह़राम है। नवाज़िल फ़क़ीह अबुल्लैस समरक़न्दी (رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه) में है : औ़रत का ख़ुश आवाज़ कर के कुछ पढ़ना "औ़रत" या'नी महल्ले सित्र (छुपाने की चीज़) है। काफ़ी इमाम अबुल बरकात नस्फ़ी में है : औ़रत बुलन्द आवाज़ से तल्बिया (या'नी لَبَّيْكَ اَللّٰهُمَّ لَبَّيْك) न पढ़े इस लिये कि इस की आवाज़ क़ाबिले सित्र (छुपाने के क़ाबिल चीज़) है। अ़ल्लामा शामी قُدِّسَ سِرُّهُ السَّامِي फ़रमाते हैं : औ़रतों को अपनी आवाज़ बुलन्द करना, इन्हें लम्बा और दराज़ (या'नी इन में उतार चढ़ाव) करना, इन में नर्म लहजा इख़्तियार करना और इन में तक़त़ीअ़ करना (काट काट कर तह़लीली अ़रूज़ या'नी नज़्म के क़वाइद के मुत़ाबिक़) अश्आ़र की त़रह़ आवाज़ें निकालना, हम इन सब कामों की औ़रतों को इजाज़त नहीं देते इस लिये कि इन सब बातों में मर्दों का उन की त़रफ़ माइल होना पाया

1.....फ़तावा रज़विय्या, 22 / 240

जाएगा और उन मर्दों में जज़्बाते शहवानी की तह़रीक पैदा होगी इसी वज्ह से औ़रत को येह इजाज़त नहीं कि वोह अज़ान दे। واللہ تعالیٰ اعلم [1]

ना'त लिखना कैसा ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! कहने वालों ने शुअ़रा को ज़बान व बयान के ह़वाले से क़ौम का दिमाग़ और तर्जुमान भी कहा है। बात अश्आ़र की अक़्साम की हो तो ग़ज़ल, नज़्म, क़सीदा, मस्नवी, रुबाई, क़त़्आ़ वग़ैरा एक लम्बी फ़ेहरिस्त है लेकिन ग़ज़ल की ता'रीफ़ में ज़मीनो आस्मान एक कर दिया जाता है, बल्कि आस्मान की बुलन्दी भी ग़ज़ल की ता'रीफ़ में नाकाफ़ी लगती है, अ़र्श की बातें होती हैं, येह भी एह़तियात़न अ़र्ज़ की है वरना कोई ह़द ही नज़र नहीं आती। वाज़ेह़ रहे कि ग़ज़ल कहने वाले **मज्ज़ूब** नहीं होते, इस के बा वुजूद इन्हें अपने (ख़याली या मजाज़ी) महबूब को सब कुछ कहने की न सिर्फ़ रिआ़यत दी जाती है बल्कि इन का ह़क़ माना जाता है और इस ह़क़ को हर शाइ़र (اِلَّا مَا شَآءَ اللہ) बे बाकाना इस्ति'माल करता है।

हमारे हां आ़म तौ़र पर ना'त भी ग़ज़ल ही के अन्दाज़ में कही जाती है, इस लिये वोह शुअ़रा जो ह़म्दो ना'त कहने की शराइत़ व आदाब से वाक़िफ़ नहीं, ह़म्दो ना'त कहते हुवे ग़ज़ल के महबूब वाली बे बाकी बरत जाते हैं और ह़म्दो ना'त में कहे गए अपने कलाम को शायद इल्हामी समझते हैं और बाला अज़् तन्क़ीद व तन्क़ीस जानते हैं। उन्हें नहीं मा'लूम ज़बान व बयान की आसानियां इस राह में ज़ियादा मुश्किल

[1] ..... رد المحتار، کتاب الصلاۃ، مطلب فی ستر العورۃ، ۲/۹۷، فتاویٰ رضویہ، ۲۲/۲۴۲

साबित होती हैं, मुमकिन है कि **उन्हों ने कोई लफ़्ज़ फूल जान कर चुना हो मगर वोही कांटा हो जाए ।** इसी लिये इस राहे सुख़न (या'नी ना'तिया शाइरी) को पुल सिरात़ की बताई जाने वाली सख़्तियों और मुश्किलात से ज़ियादा दुश्वार गुज़ार कहा गया है । यहां एह़तिराम और सलीक़े के बिग़ैर जज़्बे काम आते हैं न इल्म की ज़ियादती । यहां सिर्फ़ अदब नहीं बल्कि रूह़े अदब और ह़ुस्ने अदब कामयाब कराता है, येह ग़ज़ल का नहीं बल्कि ना'त का मह़बूब है जिस की मह़ब्बत ईमान की जान है और ईमान बिलाशुबा सरासर अदब है, लिहाज़ा जब कोई इश्क़ के समन्दर में अदब की कश्ती पर सुवार होता है तो मक़ामे मुस्त़फ़ा के अन्वार की झल्कियां उस के लौह़े दिल पर जगमगाने लगती हैं, फिर नूर की येही रौशनी जब दिल से दिमाग़ की त़रफ़ जाती है तो फ़िक्रे ना'त की ज़बां बन जाती है, मगर याद रखिये ! येह अदब, येह सलीक़ा, इश्क़ को येह तहज़ीब, ईमान को येह मन्ज़िल किसी मक़्बूले बारगाह के फ़ैज़े सोह़बत और असरे निगाह से मिलती है । येह याद हो जाने और दिल में उतर जाने बल्कि वज़ीफ़ा बन जाने वाले मिस्रए या अश्आ़र हर कोई क्यूं नहीं कह पाता ? इमाम बूसैरी व शैख़ सा'दी رَحْمَةُاللهِ تَعَالٰی عَلَيْهِمَا के अश्आ़र पहले मक़्बूल नहीं हुवे बल्कि येह हस्तियां पहले बारगाहे रिसालत में शरफ़े क़बूलिय्यत पाने वाली हुईं ।

ऐ रज़ा ख़ुद साहिबे क़ुरआं है मद्दाहे हुज़ूर

सह़ीह़, सच्ची और उ़म्दा ता'रीफ़ सिर्फ़ रस्मी आ़लिम व शाइ़र हो जाने से मुमकिन नहीं, वोह इल्म और वोह मलकए शे'र सिर्फ़ उन्हीं

का हिस्सा है जिन्हों ने अदब को मल्हूज़े ख़ातिर रखा। लफ़्ज़ों के सांचे, लहजों के ज़ाविये और अन्दाज़ो बयान के ऐसे क़रीने अभी कहां बन सके हैं जो ना'त के महबूबे करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सहीह सच्ची और उम्दा ता'रीफ़ का हक़ अदा कर सकें। फिर मुबालगे का गुमान क्यूंकर दुरुस्त हो सकता है ?

उस ज़ाते वाला सिफ़ात की हक़ीक़त जानने का दा'वा किसी मख़्लूक़ का हिस्सा ही कहां है ?....ऐ इन्सान ! इसे सआदत जान कि तुझे येह शरफ़ हासिल है कि इस बाब में ज़बान व क़लम से अपनी बिसात (ताक़त) के मुताबिक़ हदया पेश करने की ने'मत अता हुई, इस हस्ती की अज़मत व मर्तबत का उम्र भर बयान करते रहने के बा'द भी येह इक़रार किये बिग़ैर चारह नहीं कि لَا يُمْكِنُ الثَّنَآءُ كَمَا كَانَ حَقُّهٗ (मुमकिन ही नहीं कि आप की सना व ता'रीफ़ का जैसा हक़ है वोह हम से अदा हो सके) मौलाना जामी قُدِّسَ سِرُّهُ السّامی भी येही कहते हैं :

لَيْسَ كَلَامِيْ يَفِيْ بِنِعْمَتِ كَمَالِهٖ
صَلِّ اِلٰهِيْ عَلَى النَّبِيِّ وَاٰلِهٖ

और आ'ला हज़रत फ़ाज़िले बरेलवी رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه यूं तर्जुमानी करते हैं :

ऐ रज़ा ख़ुद साहिबे कुरआं है मद्दाहे हुज़ूर
तुझ से कब मुमकिन है फिर मिदहत रसूलुल्लाह की (1)

1.....हदाइक़े बख़्शिश, स. 153

ना'त गोई अहले महब्बत का काम है

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! आ'ला हज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अहमद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن को अपने आक़ा से किस क़दर महब्बत थी इस का अन्दाज़ा सिर्फ़ इसी बात से लगा लीजिये कि आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه कभी अपने पाउं पसार (फैला) कर सोते नहीं थे, अपने वुजूद को समेट कर लफ़्ज़ "मुहम्मद" (صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم) की मक्तूबी शक्ल बना लिया करते थे, जिस रौशनाई से ना'त शरीफ़ लिखा करते थे उस में ज़ा'फ़रान मिलाया करते थे।

लिहाज़ा याद रखिये ! येह बातें जभी राह पाती हैं कि जिस्मे इन्सानी के बादशाह क़ल्ब (दिल) का क़िब्ला (मर्कज़े तवज्जोह) ज़ाते पाके रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم हो, फिर हरकात व सकनात ही नहीं ख़यालात व एहसासात भी हुब्बे रसूल से सरशार होते हैं। महब्बत की ख़ासिय्यत और शर्त ही इताअ़त व इत्तिबाअ़ है। اِنَّ الْمُحِبَّ لِمَنْ يُّحِبُّ مُطِيْعٌ (गोया कि) फ़रमां बरदारी और पैरवी की लज़्ज़त व हलावत अहले महब्बत ही को मुयस्सर है। जिस की महब्बत बन्दे को मा'बूद का प्यारा बना दे, उस हस्ती की ता'रीफ़ का हक़ कैसे अदा हो सकता है ? मलकए शे'र या इल्म के कमाल से ज़ियादा इस बाब में करम ही की कार फ़रमाई सुर्ख़रू करती है।[1]

[1].....ना'त व आदाबे ना'त, स. 198 बित्तसर्रुफ़

किस का लिखा कलाम पढ़ना चाहिये ?

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! मा'लूम हुवा ना'त शरीफ़ लिखना ह़क़ीक़तन निहायत मुश्किल है जिस को लोग आसान समझते हैं, इस में तल्वार की धार पर चलना है ! अगर बढ़ता है तो उलूहिय्यत (शाने ख़ुदावन्दी) में पहुंचा जाता है और कमी करता है तो तन्क़ीस (या'नी शाने रिसालत में कमी) होती है। अलबत्ता ह़म्द आसान है कि इस में रास्ता साफ़ है जितना चाहे बढ़ सकता है। ग़रज़ ह़म्द में एक जानिब अस्लन ह़द नहीं और ना'त शरीफ़ में दोनों जानिब सख़्त ह़द बन्दी है।[1] लिहाज़ा किस किस शाइ़र की लिखी हुई ना'तें पढ़ना सुनना चाहिये ? इस ह़वाले से एक सुवाल का जवाब देते हुवे शैख़े त़रीक़त अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना की मत़बूआ़ 692 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब** सफ़ह़ा 236 पर फ़रमाते हैं : हर उस मुसलमान की लिखी हुई ना'त शरीफ़ पढ़नी सुननी जाइज़ है जो शरीअ़त के मुत़ाबिक़ हो। अब चूंकि कलाम को शरीअ़त की कसोटी पर परख़ने की हर एक में सलाहिय्यत नहीं होती लिहाज़ा आ़फ़िय्यत इसी में है कि मुस्तनद उ़लमाए अह्ले सुन्नत का कलाम सुना जाए। उर्दू कलाम सुनने के लिये मश्वरतन "ना'ते रसूल" के सात हुरूफ़ की निस्बत से 7 अस्माए गिरामी (मअ़ मजमूअ़ए ना'त) ह़ाज़िर हैं :

[1].....मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 227

﴾1﴿ ☞ इमामे अह्ले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن । (ह़दाइक़े बख़्शिश)

﴾2﴿ ☞ उस्ताज़े ज़मन ह़ज़रते मौलाना ह़सन रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان । (ज़ौक़े ना'त)

﴾3﴿ ☞ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत, मद्दाहुल ह़बीब ह़ज़रते मौलाना जमीलुर्रह़मान रज़वी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (क़बालए बख़्शिश)

﴾4﴿ ☞ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, ताजदारे अह्ले सुन्नत हुज़ूर मुफ़्तिये आ'ज़मे हिन्द मौलाना मुस्त़फ़ा रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن । (सामाने बख़्शिश)

﴾5﴿ ☞ शहज़ादए आ'ला ह़ज़रत, हुज्जतुल इस्लाम ह़ज़रते मौलाना ह़ामिद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان । (बयाज़े पाक)

﴾6﴿ ☞ ख़लीफ़ए आ'ला ह़ज़रत सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादाबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى । (रियाजुन्नईम)

﴾7﴿ ☞ मुफ़स्सिरे शहीर ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان वग़ैरा । (दीवाने सालिक)[1]

मज़ीद एक सुवाल का जवाब देते हुवे इरशाद फ़रमाते हैं : अगर ग़ैरे आ़लिम शाइ़र का कलाम पढ़ना सुनना चाहें तो किसी माहिरे फ़न सुन्नी आ़लिम से उस कलाम की पहले तस्दीक़ करवा लीजिये। इस त़रह़ اِنْ شَآءَاللهعَزَّوَجَلَّ ईमान की ह़िफ़ाज़त में मदद मिलेगी, वरना कहीं ऐसा न हो कि किसी कुफ़्रिय्या शे'र के मा'ना समझने के बा वुजूद उस की ताईद करते हुवे झूमने और ना'रहाए दादो तह़सीन बुलन्द करने के सबब

1.....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 236

ईमान के लाले पड़ जाएं। ग़ैरे आ़लिम को ना'तिया शाइ़री से अव्वलन बचना ही चाहिये और इन अहम मसाइल के इ़ल्म से क़ब्ल अगर कुछ कलाम लिख भी लिया है तो जब तक अपने तमाम कलाम के हर हर शे'र की किसी फ़ने शे'री के माहिर आ़लिमे दीन से तफ़्तीश न करवा ले उस वक़्त तक पढ़ने और छापने से मुज्तनिब (दूर) रहे। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه चूंकि पाए के आ़लिमे दीन थे, आप के शे'र का हर मिस्रअ़ ऐ़न क़ुरआनो ह़दीस के मुत़ाबिक़ हुवा करता था, लिहाज़ा बत़ौरे तह़दीसे ने'मत अपने मुबारक कलाम के बारे में एक रुबाई इरशाद फ़रमाते हैं :

हूं अपने कलाम से निहायत मह़ज़ूज़ बे जा से है अल मिन्नुतुल्लाह मह़फ़ूज़
क़ुरआन से मैं ने ना'त गोई सीखी या 'नी रहे अह़कामे शरीअ़त मल्हूज़ (1)

ना'त ख़्वानी और नज़राना

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ना'त पढ़ना सुनना यक़ीनन निहायत उ़म्दा इ़बादत है मगर क़बूलिय्यत की कुन्जी इख़्लास है, ना'त शरीफ़ पढ़ने पर उजरत लेना देना ह़राम और जहन्नम में ले जाने वाला काम है।

रज़ा जो दिल को बनाना था जल्वा गाहे ह़बीब
तो प्यारे ! क़ैदे ख़ुदी से रहीदा होना था (2)

1 .....कुफ़्रिय्या कलिमात के बारे में सुवाल जवाब, स. 238
2 .....ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 47

ना'त शरीफ़ शुरूअ़ करने से क़ब्ल या दौराने ना'त जब कोई नज़राना ले कर आना शुरूअ़ हो उस वक़्त मुनासिब ख़याल फ़रमाएं तो इस त़रह़ ए'लान फ़रमा दीजिये :

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! दा'वते इस्लामी की ना'त ख़्वां इस्लामी बहनों के लिये मदनी मर्कज़ की त़रफ़ से हिदायत है कि वोह किसी क़िस्म का नज़राना, लिफ़ाफ़ा या तोह़फ़ा ख़्वाह वोह पहले या आख़िर में या दौराने ना'त मिले क़बूल न करे। हम **अल्लाह** तआ़ला की आ़जिज़ व नातुवां बन्दियां हैं। बराहे करम ! नज़राना दे कर ना'त ख़्वां इस्लामी बहन को इम्तिह़ान में मत डालिये, रक़म आती देख कर अपने दिल को क़ाबू में रखना मुश्किल होता है। ना'त ख़्वां इस्लामी बहन को इख़्लास के साथ सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के प्यारे रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की रज़ा की त़लब में ना'त शरीफ़ पढ़ने दें, लिहाज़ा नोटों की बरसात में नहीं बल्कि बारिशे अन्वार व तजल्लियात में नहाते हुवे ना'त शरीफ़ पढ़ने दें और आप भी अदब के साथ बैठ कर ना'ते पाक सुनें।[1]

मुझ को दुन्या की दौलत न ज़र चाहिये

शाहे कौसर की मीठी नज़र चाहिये [2]

1 .....येह मज़मून दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक्तबतुल मदीना के मत़बूआ़ रिसाले **ना'त ख़्वां और नज़राना** में सफ़ह़ा 3 पर इस्लामी भाइयों के लिये मज़कूर है, जिसे सिर्फ़ मुअन्नस सीग़ों की तब्दीली से यहां नक़्ल किया गया है।

2 .....वसाइले बख़्शिश, स. 289

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! ना'त ख़्वानी में मिलने वाला नज़राना जाइज़ भी होता है और नाजाइज़ भी। चुनान्चे, इस ह़वाले से शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं : मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अह्ले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए रिसालत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن की ख़िदमत में सुवाल हुवा : ज़ैद ने अपने पांच रूपे फ़ीस मौलूद शरीफ़ की पढ़वाई के मुक़र्रर कर रखे हैं, बिग़ैर पांच रूपिया फ़ीस के किसी के यहां जाता नहीं।

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाबन इरशाद फ़रमाया : ज़ैद ने जो अपनी मजलिस ख़्वानी ख़ुसूसन राग से पढ़ने की उजरत मुक़र्रर कर रखी है नाजाइज़ व ह़राम है इस का लेना इसे हरगिज़ जाइज़ नहीं, इस का खाना सराह़तन ह़राम खाना है। इस पर वाजिब है कि जिन जिन से फ़ीस ली है याद कर के सब को वापस दे, वोह न रहे हों तो उन के वारिसों को फेरे, पता न चले तो इतना माल फ़क़ीरों पर तसद्दुक़ करे और आइन्दा इस ह़राम ख़ोरी से तौबा करे तो गुनाह से पाक हो। अव्वल तो सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का ज़िक्रे पाक ख़ुद उ़म्दा त़ाआ़त व अजल्ल इबादात से है और त़ाअ़त व इबादत पर फ़ीस लेनी ह़राम। सानिय्यन बयाने साइल से ज़ाहिर कि वोह अपनी शे'र ख़्वानी व ज़मज़मा सन्जी (या'नी राग और तरन्नुम से पढ़ने) की फ़ीस लेता है येह भी मह़ज़ ह़राम। फ़तावा आ़लमगीरी में है : गाना और अश्आ़र पढ़ना ऐसे आ'माल हैं कि इन में किसी पर उजरत लेना जाइज़ नहीं।[1]

1 .....ना'त ख़्वां और नज़राना, स. 1 ता 5 मुल्तक़त़न, ब ह़वाला फ़तावा रज़विय्या, 23 / 724-725, बित्तसर्रुफ़

तै न किया हो तो

प्यारी प्यारी इस्लामी बहनो ! हो सकता है कि किसी के ज़ेहन में येह बात आए कि येह फ़तवा तो उन के लिये है जो पहले से तै कर लेती हैं, हम तो तै नहीं करतीं, जो कुछ मिलता है वोह तबर्रुकन ले लेती हैं, इस लिये हमारे लिये जाइज़ है। उन की ख़िदमत में सरकारे आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه का एक और फ़तवा हाज़िर है, समझ में न आए तो तीन बार पढ़ लीजिये : तिलावते कुरआने अ़ज़ीम ब ग़रज़े ईसाले सवाब व ज़िक्र शरीफ़ मीलादे पाक हुज़ूर सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ज़रूर मिन जुम्ला इबादात व ता़अ़त हैं तो इन पर इजारा भी ज़रूर ह़राम व मह़ज़ूर (या'नी नाजाइज़)। और इजारा जिस त़रह़ सरीह़ अ़क़्दे ज़बान (या'नी वाज़ेह़ क़ौल व क़रार) से होता है, उ़र्फ़न शर्ते मा'रूफ़ व मा'हूद (या'नी राइज शुदा अन्दाज़) से भी हो जाता है मसलन पढ़ने पढ़वाने वालों ने ज़बान से कुछ न कहा मगर जानते हैं कि देना होगा (और) वोह (पढ़ने वाले भी) समझ रहे हैं कि "कुछ" मिलेगा, उन्हों ने इस त़ौर पर पढ़ा, इन्हों ने इस निय्यत से पढ़वाया, इजारा हो गया, और अब दो वज्ह से ह़राम हुवा, एक तो त़ाअ़त (या'नी इबादत) पर इजारा येह ख़ुद ह़राम, दूसरे उजरत अगर उ़र्फ़न मुअ़य्यन नहीं तो इस की जहालत से इजारा फ़ासिद, येह दूसरा ह़राम।[1] लेने वाला और देने वाला दोनों गुनहगार होंगे।[2] इस मुबारक फ़तवे से रोज़े

1 .....फ़तावा रज़विय्या, 19 / 486, 487 मुल्तक़त़न

2 ..... المرجع السابق، ص۴۹۵

रौशन की त़रह़ ज़ाहिर हो गया कि साफ़ लफ़्ज़ों में तै न भी हो तब भी जहां Understood हो कि चल कर मह़फ़िल में क़ुरआने पाक, आयते करीमा, दुरूद शरीफ़ या ना'त शरीफ़ पढ़ते हैं, कुछ न कुछ मिलेगा रक़म न सही "सूट पीस" वग़ैरा का तोह़फ़ा ही मिल जाएगा और मह़फ़िल करवाने वाली भी जानती है कि पढ़ने वाली को कुछ न कुछ देना ही है। बस नाजाइज़ व ह़राम होने के लिये इतना काफ़ी है कि येह "उजरत" ही है और फ़रीक़ैन (या'नी देने और लेने वाले) दोनों गुनहगार।(1)

"तसव्वुरे मदीना कीजिये" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से ना'त पढ़ने की चौदह निय्यतें

(1) **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالٰی علیہ والہٖ وسلَّم की रज़ा के लिये (2) ह़त्तल वस्अ़ बा वुज़ू (3) क़िब्ला रू (4) आंखें बन्द किये (5) सर झुकाए (6) गुम्बदे ख़ज़रा (7) बल्कि मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तसव्वुर बांध कर ना'त शरीफ़ पढ़ूं (8) सुनूंगी (9) मौक़अ़ की मुनासबत से **वसाइले बख़्शिश** सफ़्ह़ा 11 पर मौजूद ना'त ख़्वान के लिये दिया गया ए'लान करने की सआ़दत ह़ासिल करूंगी (10) किसी की आवाज़ भली न लगी तो उस को ह़क़ीर जानने से बचूंगी (11) मज़ाक़न किसी कम सुरीली आवाज़ वाली की नक़्ल नहीं उतारूंगी (12) ना'त ख़्वान इस्लामी बहनें

1 .....ना'त ख़्वां और नज़राना, स. 5 ता 6 बित्तसर्रुफ़

ज़ियादा और वक़्त कम हो तो मुख़्तसर कलाम पढ़ूंगी (13) ➳ कोई दूसरी सलातो सलाम पढ़ रही होगी तो बीच में पढ़ने की जल्दी मचा कर ख़ुद शुरूअ़ न कर के उस की ईज़ा रसानी से बचूंगी (14) ➳ इनफ़िरादी कोशिश के ज़रीए दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इजतिमाआ़त, मदनी क़ाफ़िले, मदनी इन्आ़मात वग़ैरा की तरग़ीब दूंगी।[1]

"ना'ते रसूले पाक" के 10 हुरूफ़ की निस्बत से ना'त सुनने की दस निय्यतें

(1) ➳ अल्लाह व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ والہٖ وسلَّم की रज़ा के लिये (2) ➳ हत्तल वस्अ़ बा वुज़ू (3) ➳ क़िब्ला रू (4) ➳ आंखें बन्द किये (5) ➳ सर झुकाए (6) ➳ दो ज़ानू बैठ कर (7) ➳ गुम्बदे ख़ज़रा (8) ➳ बल्कि मकीने गुम्बदे ख़ज़रा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का तसव्वुर बांध कर ना'त शरीफ़ सुनूंगी (9) ➳ रोना आया और रियाकारी का ख़द्शा महसूस हुवा तो रोना बन्द करने के बजाए रियाकारी से बचने की कोशिश करूंगी (10) ➳ किसी को रोती तड़पती देख कर बद गुमानी नहीं करूंगी।[2]

गानों की आ़दी ना'त ख़्वां कैसे बनी ?

बहावल पुर (पंजाब, पाकिस्तान) बस्ती महमूदाबाद की मुक़ीम इस्लामी बहन के मक्तूब का ख़ुलासा है : मैं नमाज़ जैसी अ़ज़ीम

[1] .....वसाइले बख़्शिश, इब्तिदाई सफ़हात, बित्तसर्रुफ़
[2] .....वसाइले बख़्शिश, इब्तिदाई सफ़हात, बित्तसर्रुफ़

इबादत जो हर आक़िल व बालिग़ मुसलमान मर्द व औरत पर फ़र्ज़ है उस से ग़ाफ़िल थी, इस के इलावा बहुत सी बुराइयों का शिकार हो कर अपनी ज़िन्दगी के लैलो नहार बसर कर रही थी। गाने सुनने, गुनगुनाने का बहुत शौक़ था, वोह ज़बान जो अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की अ़ज़ीम ने'मत है उसे ज़िक्रो शुक्र में मसरूफ़ रखने के बजाए गीत गाने में आलूदा कर के अपनी ज़िन्दगी के शबो रोज़ ज़ाएअ़ कर रही थी। ब ज़ाहिर ज़िन्दगी के दिन बड़े सुहाने गुज़र रहे थे मगर दर हक़ीक़त मैं अपनी क़ब्रो आख़िरत बरबाद कर रही थी और बद क़िस्मती से गाने बाजे सुनने और गुनगुनाने के अ़ज़ाबात से बे ख़बर थी।

मेरे दिल पर छाई ग़फ़्लत की तारीकियां फ़िक्रे आख़िरत की किरनों से कुछ यूं दूर हुईं कि एक मरतबा अम्मी जान के हमराह दा'वते इस्लामी के तह़्त होने वाले तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ की आख़िरी निशस्त में शिर्कत की सआ़दत मिल गई, ज़िन्दगी में पहली बार दा'वते इस्लामी के मुश्कबार मदनी माह़ोल में ह़या की बहार देखी तो दिल शाद हो गया, कसीर इस्लामी बहनें मदनी बुर्क़अ़ ओढ़े हुवे थीं, उन के अख़्लाक़ व किरदार भी बहुत प्यारे थे, मज़ीद उस सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में जब पन्दरहवीं सदी की अ़ज़ीम इल्मी व रूह़ानी शख़्सिय्यत, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अह्ले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी रज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه का ग़ाफ़िल दिलों को बेदार करने वाले सुन्नतों भरे बयान का आग़ाज़ हुवा तो मैं हमा तन गोश हो गई, अल्फ़ाज़ में न जाने कैसी तासीर थी कि दिल की कैफ़िय्यत ही बदल गई

और एक क़ल्बी सुकून का एह़सास होने लगा, बयान के इख़्तिताम पर जब अमीरे अह्ले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने बारगाहे इलाही में दुआ शुरूअ़ की तो दुआ के दौरान अपने गुनाहों को याद कर के बे साख़्ता मेरी आंखों से अश्कों का सैलाब उमड़ आया और मैं ने फूट फूट कर रोना शुरूअ़ कर दिया, जूं जूं अश्क बहते गए मेरे सीने से गुनाहों का बार कम होता महसूस हुवा। अल ग़रज़ मैं ने अपनी साबिक़ा बद आ'मालियों और बिल ख़ुसूस गाने बाजे सुनने, गुनगुनाने से तौबा की और दा'वते इस्लामी के ह़या से मा'मूर सुन्नतों भरे मदनी माह़ोल से वाबस्ता होने का पुख़्ता इरादा कर लिया, यूं इस रूह़ परवर सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ से फ़िक्रे आख़िरत की सौग़ात ले कर घर लौटी, मैं ने अ़लाक़े में होने वाले इस्लामी बहनों के सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ का पता मा'लूम किया और उस में शिर्कत करना अपना मा'मूल बना लिया, जिस की बरकत से मज़ीद मेरे जज़्बे को चार चांद लग गए, मेरी गाने की आ़दते बद रुख़्सत हो गई और मैं ना'ते रसूले मक़्बूल सुनने, पढ़ने की सआ़दत पाने लगी, पहले गाने गा कर अपने लिये हलाकत का सामान इकट्ठा करती थी मगर अब गाने के बेहूदा अश्आ़र की जगह ना'ते रसूले मक़्बूल ज़बान पर जारी रहने लगी, मदनी बुर्क़अ़ लिबास का ह़िस्सा बन गया, मदनी इन्आ़मात पर अ़मल के साथ साथ दूसरों तक नेकी की दा'वत पहुंचाने में ह़िस्सा भी लेने लगी और अब ता दमे तह़रीर अ़लाक़ाई सत्ह़ पर ख़ादिमा होने की हैसिय्यत से सुन्नतों की ख़िदमत आ़म करने में मश्ग़ूल हूं।

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

ماخذومراجع

نمبر شمار	کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
	قرآن مجید	کلام باری تعالیٰ	
1	کنز الایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ
2	الطبقات الکبریٰ	محمد بن سعد بن منیع ہاشمی، متوفی ۲۳۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۱ھ
3	صحیح البخاری	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۸ھ
4	الادب المفرد	امام ابو عبد اللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفی ۲۵۶ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۰ھ
5	سنن ابن ماجۃ	امام ابو عبد اللہ محمد بن یزید ابن ماجہ، متوفی ۲۷۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
6	سنن الترمذی	امام ابو عیسیٰ محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفی ۲۷۹ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2008ء
7	المعجم الکبیر	امام ابو قاسم سلیمان بن احمد طبرانی، متوفی ۳۶۰ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2007ء
8	المستدرک علی الصحیحین	امام ابو عبد اللہ محمد بن عبد اللہ حاکم نیشاپوری، متوفی ۴۰۵ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۷ھ
9	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	ابو عمر یوسف بن عبد اللہ ابن عبد البر قرطبی، متوفی ۴۶۳ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۲۷ھ
10	کتاب الشفاء	القاضی ابو الفضل عیاض مالکی، متوفی ۵۴۴ھ	دار الفکر، بیروت ۱۴۳۲ھ
11	معجم البلدان	شہاب الدین یاقوت بن عبد اللہ حموی، متوفی ۶۲۶ھ	دار صادر بیروت ۱۳۹۷ھ
12	امتاع الاسماع	تقی الدین ابو عباس احمد بن علی مقریزی، متوفی ۸۴۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
13	الاصابۃ فی تمییز الصحابۃ	حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی، متوفی ۸۵۶ھ	المکتبۃ التوفیقیہ مصر
14	المواھب اللدنیۃ	شہاب الدین احمد بن محمد قسطلانی، متوفی ۹۲۳ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت 2009ء
15	سبل الھدیٰ والرشاد	محمد بن یوسف صالحی شامی، متوفی ۹۴۲ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۴ھ
16	الزواجر	احمد بن محمد ابن حجر مکی ہیتمی متوفی ۹۷۳ھ	دار الحدیث القاھرۃ
17	کنز العمال	علاء الدین علی متقی بن حسام الدین ہندی، متوفی ۹۷۵ھ	دار الکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۴ھ

18	شرح العلامة الزرقانی	ابو عبد اللہ محمد بن عبد الباقی زرقانی، متوفی ۱۱۲۲ھ	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۱۷ھ
19	فتاوی ھندیة	علامہ ھمام مولانا شیخ نظام، متوفی ۱۱۶۱ھ وجماعة من علماء الھند	دار الکتب العلمیة بیروت ۱۴۲۱ھ
20	رد المحتار	محمد امین ابن عابدین شامی، متوفی ۱۲۵۲ھ	دار المعرفة بیروت ۱۴۲۸ھ
21	آئینۂ قیامت	مولانا حسن رضا خان قادری متوفی ۱۳۲۶ھ	مکتبة المدینہ باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
22	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن لاھور
23	حدائق بخشش	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفی ۱۳۴۰ھ	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۳ھ
24	بھار شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفی ۱۳۶۷ھ	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
25	مراٰۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفی ۱۳۹۱ھ	نعیمی کتب خانہ گجرات
26	الاعلام للزرکلی	خیر الدین زرکلی، متوفی ۱۳۹۶ھ	دار العلم للملایین، بیروت 2005ء
27	ملفوظات اعلیٰ حضرت	شہزادۂ اعلیٰ حضرت مفتی اعظم ھند مولانا محمد مصطفےٰ رضا خان متوفی ۱۴۰۲ھ	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
28	سیرت مصطفیٰ	شیخ الحدیث علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی، متوفی ۱۴۰۶ھ	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۹ھ
29	شاہنامہ اسلام مکمل	ابو الاثر حفیظ جالندھری	الحمد پبلی کیشنز 2006ء
30	کفریہ کلمات کے بارے میں سوال جواب	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
31	نعت خواں اور نذرانہ	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۲۸ھ
32	وسائل بخشش	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۲ھ
33	پردے کے بارے میں سوال جواب	حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ	مکتبة المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۴۳۰ھ
34	نعت و آداب نعت	علامہ کوکب نورانی دَامَتْ بَرَکَاتُھُمُ الْعَالِیَہ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز 2003ء
35	اردو لغت	ادارۂ ترقی اُردو بورڈ	ترقی اُردو لغت بورڈ کراچی ۲۰۰۶ء
36	دیوان حسان بن ثابت الانصاری	صحابی رسول حسان بن ثابت رضی اللہ تعالی عنہ	دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۱۴ھ

फ़ेहरिस्त

उनवान	सफ़्हा	उनवान	सफ़्हा
दुरूदे पाक की फ़ज़ीलत	1	वफ़ाते ज़ाहिरी के बा'द सहाबियात का कलाम	19
आमदे सरकार पर खुशियों के तराने	1		
आमदे सरकार पर इज़हारे मसर्रत	4	सरकार की फूफी जनाबे सय्यिदतुना अरवा के अश्आ़र	19
शाने नबवी के क्या कहने !	4		
अश्आ़र का हुक्म	6	हज़रते हिन्द बिन्ते हारिस बिन अ़ब्दुल मुत्तलिब का कलाम	21
कैसे अश्आ़र दुरुस्त हैं ?	8		
ता'रीफ़े खुदा व रसूल पर मुश्तमिल अश्आ़र को क्या कहते हैं ?	10	हज़रते उम्मे ऐमन के फ़िराक़े महबूबे खुदा पर कहे गए अश्आ़र	22
सरकार की शान ब ज़बाने कुरआन	11	हज़रते आ़तिका बिन्ते ज़ैद का कलाम	24
पहली आयते मुबारका	11	इस्लामी बहनों का ना'त पढ़ना कैसा ?	25
दूसरी आयते मुबारका	12	इस्लामी बहनें माईक इस्ति'माल न करें	27
तीसरी आयते मुबारका	13		
चौथी आयते मुबारका	13	औ़रत के राग की आवाज़	28
अ़ज़मते सरकार का इज़हार ब ज़बाने सहाबियात	14	ना'त लिखना कैसा ?	29
		ऐ रज़ा खुद साहिबे कुरआं है मद्दाहे हुज़ूर	30
सरकार की वालिदए माजिदा जनाबे सय्यिदतुना आमिना के अश्आ़र	16	ना'त गोई अह्ले महब्बत का काम है	32
सरकार की रिज़ाई बहन जनाबे सय्यिदतुना शैमा का कलाम	17	किस का लिखा कलाम पढ़ना चाहिये ?	33
सय्यिदतुना आइशा सिद्दीक़ा के अश्आ़र	18	ना'त ख़्वानी और नज़राना	35
		तै न किया हो तो	38

"तसव्वुरे मदीना कीजिये" के 14 हुरूफ़ की निस्बत से ना'त पढ़ने की चौदह निय्यतें	39	गानों की आ़दी ना'त ख़्वां कैसे बनी ?	40
		माख़ज़ो मराजेअ़	43
"ना'ते रसूले पाक" के 10 हुरूफ़ की निस्बत से ना'त सुनने की दस निय्यतें	40	फ़ेहरिस्त	45
		ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिया	46

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये

ज़मीनो ज़मां तुम्हारे लिये मकीनो मकां तुम्हारे लिये
चुनीनो चुनां तुम्हारे लिये बने दो जहां तुम्हारे लिये
दहन में ज़बां तुम्हारे लिये बदन में है जां तुम्हारे लिये
हम आए यहां तुम्हारे लिये उठें भी वहां तुम्हारे लिये
येह शम्सो क़मर येह शामो सहर येह बर्गो शजर येह बाग़ो समर
येह तैग़ो सिपर येह ताजो कमर येह हुक्मे रवां तुम्हारे लिये
न रूहे अमीं न अ़र्शे बरीं न लौहे मुबीं कोई भी कहीं
ख़बर ही नहीं जो रम्ज़े खुलीं अज़ल की निहां तुम्हारे लिये
सबा वोह चले कि बाग़ फले वोह फूल खिले कि दिन हों भले
लिवा के तले सना में खुले "रज़ा" की ज़बां तुम्हारे लिये

(हदाइक़े बख़्शिश, 348)

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَ الصَّلٰوۃُ وَ السَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े मग़रिब आप के यहां होने वाले दा'वते इस्लामी के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इजतिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ❁ सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये मदनी क़ाफ़िले में आशिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ❁ रोज़ाना "फ़िक्रे मदीना" के ज़रीए मदनी इन्आ़मात का रिसाला पुर कर के हर मदनी माह की पहली तारीख़ अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा मदनी मक़सद : "मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।" اِنْ شَآءَ اللہ

अपनी इस्लाह़ के लिये "मदनी इन्आ़मात" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "मदनी क़ाफ़िलों" में सफ़र करना है। اِنْ شَآءَ اللہ

ISBN
0133007
MC 1286

मक्तबतुल मदीना (हिन्द) की मुख़्तलिफ़ शाख़ें
❁ देहली :- उर्दू मार्केट, मटिया महल, जामेअ़ मस्जिद, देहली -6, फ़ोन : 011-23284560
❁ अहमदाबाद :- फ़ैज़ाने मदीना, त्रीकोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापुर, अहमदाबाद-1, गुजरात, फ़ोन : 9327168200
❁ मुम्बई :- फ़ैज़ाने मदीना, ग्रान्ड फ्लोर, 50 टन टन पुरा इस्टेट, खड़क, मुम्बई, महाराष्ट्र, फ़ोन : 09022177997
❁ हैदराबाद :- मुग़ल पुरा, पानी की टंकी, हैदराबाद, तेलंगाना, फ़ोन : (040) 2 45 72 786
E-mail : maktabadelhi@gmail.com, Web : www.dawateislami.net